आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 15/12/2024; Published: 30/12/2024

कविता

ओ भी क्या दिन थे

- रिहाना. एस
विद्याश्रम कॉलेज
जयलक्ष्मीपुरं , मैसूरू
फोन नम्बर : ९११३५९४५४७

ओभी क्या दिन थे।

जब हम सब एक ही,

कक्षा में, ज्ञानार्जन करते

एक दूसरे से बतियाते

रुटते, खेलते हँसते-हँसाते

जीवन का हर पल उल्लास से

बिताते, हम में से कोई दु:खित

होता, तो उसके दु:खों को बाँटते

हमारे मन में ना लालच था

न भेद था, न कोई जाती का अन्तर

वैसे हम वहाँ हिन्दू, मुस्लमान, ईसाई

और सिख सब धर्म के थे, सबका दुःख हमारा था।

सबकी खुशी हमारी थी

हम एक थे।

जैसे ही इस देश में लालची लोग

आर्य, अपने फायदे के लिए

कुर्सी के लिए अपनी लालसा के

लिए भेद डाला सबको भित्र-भिन्न,

कर डाला। आज हम सिर्फ एक धर्म

एक जाति के हो कर रह गये

कोई किसी की परवाह नहीं करता,

आदमियो में वह सहन- शक्ति नही

वह चिंता नहीं क्यों यह सब

हो रहा है। उसे जानने कि इच्छा नही

नाही उनको, अवश्यकता है

क्या ये सिर्फ धर्म का मद है।

इन्सानियत को भूल बैठा है

क्या वह, वही इन्सान है, जो

इस देश की संतान है।

क्यों यह शत्रुता, धर्मों - धर्मों का अंहकार है

क्या ये अंहकार कभी नहीं मिटेगा

क्या कभी हम एक नहीं होंगे?

जब भगवान ने ही जन्म देते समय भेद नही

किया, तो हम कैसे इस भेद में पड़ गए ?

भगवान सब धर्म - जातियों के लोगे को

दो आँख, दो कान और दिमाग दिया।

रक्त में भी भेद नहीं किया।

सभी का रक्त लाल है, किसी का हरा-रंग,

नीला रंग या काला नहीं है। क्यों ये भेद,

क्या कभी वह दिन नहीं लौटेंगे,

कभी हम मै से हम नहीं होंगे।

****